विपणन या विपणन विचारधारा से अर्थ
(MEANING OF MARKETING OR MARKETING CONCEPT)

DR.BACHHA KUMAR RAJA
B.M.COLLEGE RAHIKA MADHUBANI
B.COM PART-I

साधारणतया विपणन का अर्थ वस्तुओं के क्रय एवं विक्रय से लगाया जाता है। लेकिन विपणन विशेषज्ञ इसका अर्थ वस्तुओं के क्रय एवं विक्रय तक सीमित नहीं करते हैं बल्कि क्रय एवं विक्रय से पूर्व एवं पश्चात् की क्रियाओं को भी इसका एक अंग मानते हैं। कुछ विद्वान तो क्रय एवं विक्रय के अतिरिक्त सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने को भी विपणन का एक प्रमुख कार्य मानकर विपणन का अर्थ लगाते हैं। इस प्रकार विपणन का कोई सर्वमान्य अर्थ या परिभाषा नहीं है। अतः हमने अध्ययन की सुविधा के लिए विपणन के अर्थ की व्याख्या करने वाले विद्वानों को दो भागों में बांट दिया है—

(I) पुरानी या संकीर्ण विचारधारा वाले व

(II) नयी विचारधारा वाले। इन दोनों का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है :

(1) विपणन सम्बन्धी परम्परागत विचारधारा (Traditional Conceptof Marketing)

विपणन सम्वन्धी परम्परागत व संकीर्ण विचारधारा में निम्न विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं को ले सकते हैं :

(1) प्रो. पाइल के मत में, "विपणन में क्रय एवं विक्रय दोनों ही क्रियाएं शामिल होती हैं।" [इसका अर्थ यह है कि विपणन में केवल क्रय एवं विक्रय क्रियाओं का ही अध्ययन किया जाता है, शेष अन्य क्रियाएं जैसे, परिवहन, भण्डार, वित्त व्यवस्था, जोखिम, आदि विपणन की परिभाषा के अन्तर्गत नहीं आती हैं

(2) टाउसले, क्लार्क एवं क्लार्क के अनुसार, "विपणन में वे सभी प्रयत्न शामिल हैं जो वस्तुओं और सेवाओं के स्वामित्व हस्तान्तरण को प्रभावित करते हैं और उनके भौतिक वितरण की व्यवस्था करते हैं।' वस्तुओं और सेवाओं के स्वामित्व को बदलने में जो भी क्रियाएं होती हैं वे सव विपणन की परिभाषा के अन्तर्गत आती हैं। साथ ही इस कार्य के लिए जो भौतिक वितरण का कार्य किया जाता है वह भी विपणन के अन्तर्गत आता है। भौतिक वितरण से अर्थ वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने एवं उनका संग्रह करने से है।